

**न्यायालय- व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-1, गोहद जिला भिण्ड (म०प्र०)**

{समक्ष-अमित कुमार गुप्ता}

व्यवहार वाद क्र० 52 ए/2017

संस्थित दिनांक 12.08.15

1. कमलकिशोर आयु 39 साल पुत्र गनेशराम
2. विजयकुमार आयु 36 साल पुत्र रामदास  
समस्त जाति जाटव, निवासीगण जामना रोड  
वार्ड क्र० 24 भिण्ड म०प्र०

.....वादीगण

**विरुद्ध**

1. महावीर पुत्र हरिविलास आयु 25 साल  
जाति जाटव निवासी ग्राम सिनोर  
तहसील गोहद जिला भिण्ड म०प्र०
2. सुनील शर्मा पुत्र शिवचरन शर्मा जाति ब्राम्हण  
निवासी ग्राम सिनोर तहसील गोहद जिला भिण्ड म०प्र०
3. म०प्र० शासन द्वारा कलेक्टर भिण्ड म०प्र०
4. शीलादेवी पुत्री मनीराम पत्नी रामगोपाल जाटव  
निवासी हाल ग्राम मकरेटा तहसील गोहद  
जिला भिण्ड म०प्र०
5. राजाबेटी बेवा पत्नी हरविलास जाटव  
निवासी ग्राम सिनोर परगना गोहद जिला भिण्ड म०प्र०
6. श्रीमती लालीबाइ पुत्री हरविलास जाति जाटव  
निवासी ग्राम गोवई पोस्ट बिल्हेटी जिला ग्वालियर म०प्र०

.....प्रतिवादीगण

---

वादीगण की ओर से अधिवक्ता श्री दाताराम बंसल।  
प्रतिवादी क्र० 1 व 3 पूर्व से एकपक्षीय।  
प्रतिवादी क्र० 2 द्वारा अधिवक्ता श्री भूपेन्द्र कांकर।  
प्रति०क्र० 4, 5 व 6 द्वारा अधिवक्ता श्री जी०एस० गुर्जर।

---

**:::: निर्णय :::**

**(आज दिनांक 28.03.2018 को उद्घोषित)**

यह वाद वास्ते स्वत्व घोषणा, स्थाई निषेधाज्ञा तथा विक्रय पत्र दिनांक 24.06.2014 को  
वादीगण के हितों के प्रतिकूल शून्य व निष्प्रभावी घोषित कराए जाने बावत् भूमि सर्वे क्र० 294 रकबा

0.54 हे० के 1/3 भाग अर्थात् रकबा 0.18 हे० स्थित मौजा सिनोर तहसील गोहद जिला भिण्ड (जिसे अत्र पश्चात् **“विवादित भूमि”** कहा जायेगा), के संबंध में प्रस्तुत किया गया है।

2. वाद पत्र के सुसंगत अभिवचन संक्षेप में इस प्रकार से हैं कि विवादित भूमि के वादीगण रकबा 0.18 हे० के संयुक्त स्वामित्व व आधिपत्यधारी है। उक्त भूमि को प्रति०क्र० 1 के बाबा मनीराम पुत्र खोजीराम निवासी ग्राम सिनोर से वादीगण ने दिनांक 29.01.2013 को 1,45,800/-रूपये प्रतिफल देकर क्रय किया और कब्जा प्राप्त किया तभी से वादीगण विवादित भूमि के स्वामित्व व आधिपत्यधारी हो गए। जब वादीगण ने पटवारी से नामांतरण करने के लिए कहा तो पटवारी ने बताया कि उनका नामांतरण हो चुका है। विक्रय पत्र करने के बाद प्रति०क्र० 1 के बाबा मनीराम की मृत्यु हो गयी तब प्रति०क्र० 1 ने बदनियती से विवादित भूमि व अन्य भूमियों जो मनीराम की थी, उनका वादीगण के हक में विक्रय पत्र को छिपाकर स्वयं मनीराम का वारिस बताकर अपने नाम अवैधानिक रूप से नामांतरण पंजी क्र० 4 दिनांक 15.11.13 व आदेश दिनांक 23.12.13 के माध्यम से अपना नामांतरण विधि विरुद्ध रूप से करा लिया और नामांतरण कराकर वादीगण को हैरान व परेशान करने के लिए वादीगण के हक व कब्जे की खरीदी हुई भूमि को हड़पने के उद्देश्य से बिना वादीगण की जानकारी के दिनांक 24.06.14 को प्रतिवादीगण के पक्ष में दिखावटी व अधिकार विहीन विक्रय पत्र निष्पादित करा दिया जो कि वादीगण के विक्रय पत्र के मुकाबले शून्य व निष्प्रभावी है। विवादित भूमि रकबा 0.54 के 1/3 में प्रतिवादी क्र० 4 शीलादेवी के पिता एवं प्रति०क्र० 5 राजाबेटी के ससुर तथा प्रति०क्र० 6 लीलाबाई के बाबा मनीराम विवादित भूमि के भूमिस्वामी व आधिपत्यधारी थे जिनसे वादीगण ने बतौर प्रतिफल 1,45,800/- रूपये में विवादित भूमि का अपने हक में वयनामा कराया और तब से ही वादीगण काशत करते चले आ रहे हैं। प्रति०क्र० 4, 5 व 6 का विवादित भूमि पर न तो कोई स्वत्व व अधिकार था और न ही हैं, उन पर विक्रय पत्र बाध्यकारी है। प्रतिवादीगण प्रति०क्र० 1 से मिलकर वादी को हैरान व परेशान करने के लिए दुरभि संधि कर कार्यवाही कर रहे हैं।

3. यह भी अभिवचन किया कि प्रतिवादी क्र० 1 को प्रति०क्र० 2 के हक में विवादित भूमि का विक्रय पत्र करने का कोई अधिकार नहीं था और उक्त कथित विक्रय पत्र के आधार पर नामांतरण कराने का भी प्रतिवादी को अधिकार नहीं था। इस प्रकार से उनके द्वारा की गयी कार्यवाही वादीगण को परेशान करने के लिए विधि विरुद्ध एवं हितों के प्रतिकूल शून्य व निष्प्रभावी है। दि० 25.06.15 को जब वादीगण अपनी जमीन जुतवा रहे थे तो प्रतिवादीगण ने आकर धौंस दी कि भूमि प्रति०क्र० 2 सुनील शर्मा को विक्रय कर दी है, अब वही खेती करेंगे तब वादीगण ने तहसील गोहद में आकर विक्रय पत्र एवं नामांतरण पंजी की जानकारी प्राप्त की जिससे पता चला कि प्रति०क्र० 2 ने अधिकार विहीन विक्रय पत्र के आधार पर नामांतरण करा लिया है। वाद प्रस्तुति के साथ साथ राजस्व न्यायालय में भी वादीगण ने अपील कर दी है जो कि संचालित है। अतः वादीगण ने वाद के माध्यम से स्वत्व घोषणा, स्थाई निषेधाज्ञा तथा विक्रय पत्र दिनांक 24.06.14 को उनके हितों के प्रतिकूल, शून्य एवं निष्प्रभावी घोषित कराने की सहायता चाही है।

Filing no 2303009772015 3

RCS-A/006/00089/2015

4. प्रतिवादी क्र० 2 ने जबाव दावा प्रस्तुत कर वादपत्र के अभिवचनों का प्रत्याख्यान करते हुए अभिवचन किया कि विवादित भूमि के सर्वे क्र० 294 रकबा 0.54 के 1/3 भाग का वयनामा वादीगण ने मनीराम से कराए जाने की कोई जानकारी प्रतिवादी को नहीं है और विवादित भूमि पर वादीगण का कब्जा नहीं है, बल्कि विवादित भूमि पर प्रतिवादी का कब्जा है और खेती हो रही है। प्रति०क्र० 1 को कर्जा पटाने के लिए रूपयों की आवश्यकता थी इसी कारण प्रतिवादी क्र० 2 से 4,50,000 रुपये लेकर गवाहों के समक्ष रजिस्टर्ड विक्रय पत्र निष्पादित कराकर विवादित भूमि का कब्जा सौंप दिया तब से प्रति०क्र० 2 की खेती हो रही है और राजस्व अभिलेख में भी नामांतरण कराया। कथित दिनांक 25.06.15 को वादीगण से उसकी कोई बातचीत नहीं हुई। वादीगण भिण्ड में निवास करते हैं जबकि प्रतिवादी ग्राम सिनौर का निवासी है। वादीगण ने न्यायशुल्क कम प्रस्तुत की है और मूल्यांकन कम किया है। इस कारण से वाद प्रचलन योग्य नहीं है। अतः वाद सव्यय निरस्त करने की प्रार्थना की है।

5. प्रति०क्र० 4 लगायत 6 द्वारा प्रथक से जबाव दावा प्रस्तुत कर अभिवचन किया कि मनीराम को अकेले विक्रय करने का अधिकार नहीं था क्योंकि प्रतिवादीगण शीलाबाई मनीराम की पुत्री है, राजाबेटी पूर्व मृत पुत्र हरविलास की पत्नी होकर पुत्रबधू है तथा लालीबाई हरविलास की पुत्री है जिन्हें जन्म से ही उक्त भूमि में अधिकार प्राप्त हैं। प्रति०क्र० 1 को अकेले अपने पक्ष में नामांतरण कराने का कोई अधिकार नहीं था अतः उसके पक्ष में हुआ नामांतरण आदेश दिनांक 23.12.13 विधि विरुद्ध है। उक्त नामांतरण के आधार पर किया गया विक्रय पत्र भी शून्य है। आपत्ति के रूप में अभिवचन किए थे। खोजा पुत्र जुल्ली के नाम से ग्राम सिनौर में कृषि भूमि व जायदाद थी जो उनके मरने के बाद मनीराम, गनेशराम तथा रामदास के पुत्र होने से प्राप्त हुई। मनीराम के एक पुत्र हरविलास व एक पुत्री शीलाबाई थी। मनीराम के जीवनकाल में पुत्र हरविलास फौत हो गए जिनकी पत्नी राजाबेटी तथा पुत्री लालीबाई कानूनन सहदायिक होने से भूमि में समान रूप से हक रखती हैं। मनीराम के नाम से धारित भूमि में आधे भाग की शीलाबाई तथा आधे भाग की मनीराम के पुत्र हरविलास की विधवा राजाबेटी हरविलास की पुत्री लीलाबाई व पुत्र महावीर वारिस हुए। इसलिए महावीर के द्वारा अकेले किए गए अंतरण निरस्त योग्य है।

6. उभय पक्षों के अभिवचनों एवं प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर पूर्व पीठासीन अधिकारी द्वारा वाद प्रश्न निम्नानुसार विरचित किये गये, जिनका निष्कर्ष विवेचन उपरान्त उनके समक्ष दिया जायेगा—

क्र०

वाद-प्रश्न

निष्कर्ष

- 1 क्या भूमि सर्वे क्र० 294 रकबा 0.54 हे० में से 1/3 भाग रकबा 0.18 हे० स्थित ग्राम सिनौर तहसील गोहद जिला भिण्ड पर वादीगण का स्वत्व है ?
- 2 क्या वादग्रस्त भूमि पर वादीगण का आधिपत्य है ?
- 3 क्या विवादित भूमि का प्रति०क्र० 1 के द्वारा प्रति०क्र० 2 के पक्ष में किया गया विक्रय पत्र दि० 24.06.14 वादीगण के हक तक

“साबित”

“साबित”

“साबित”

- वादीगण के मुकाबले शून्य है ?
- 4 क्या प्रतिवादीगण वादग्रस्त भूमि पर वादीगण के आधिपत्य में "प्रतिवादी क्रमांक 2 हस्तक्षेप हेतु हस्तक्षेप करने हेतु प्रयासरत हैं ? प्रयासरत हैं"
  - 5 क्या वादीगण ने वाद का उचित मूल्यांकन कर पर्याप्त न्याय "हाँ"
  - 6 स्हायता एवं व्यय ? " कण्डिका 14 के अनुसार आज्ञाप्त किया गया।"

### सकारण निष्कर्ष

7. प्रकरण में वादीगण की ओर से स्वयं वादी विजयकुमार वा०सा० 1, यशवंतसिंह वा०सा० 2 को परीक्षित कराया गया है जबकि प्रतिवादीगण की ओर से शीलादेवी प्रति०सा० 1, सुनील शर्मा प्रति०सा० 2, आशीष शर्मा प्रति०सा० 3, अशोक शर्मा प्रति०सा० 4 को परीक्षित कराया गया। दस्तावेजों में वादीगण की ओर से धारा 80 सीपीसी का सूचनापत्र प्र०पी० 1, डाक रसीद प्रपी० 2, विक्रय पत्र दिनांक 24.06.14 की प्रमाणित प्रति प्र०पी० 3, नामांतरण पंजी क्र० 8 आदेश दि० 14.08.14 प्रमाणित प्रति प्र०पी० 4, नामांतरण पंजी क्र० 4 आदेश दिनांक 13.12.13 प्रमाणित प्रति प्र०पी० 5, अनुविभागीय अधिकारी के प्रकरण 62/2014-15/अपील माल की आदेश पत्रिका की प्रमाणित प्रति प्र०पी० 6 व 7, अपील मेमो प्र०पी० 8, अनुविभागीय अधिकारी के प्रकरण 61/2014-15/अपील माल की आदेश पत्रिका प्र०पी० 9 व 10, अपील मेमो प्रपी० 11, विक्रय पत्र दिनांक 29.01.13 की प्रमाणित प्रति प्र०पी० 12 प्रस्तुत की है। प्रतिवादीगण की ओर से विक्रय पत्र दिनांक 24.06.14 की प्रति प्र०डी० 1, भू अधिकार ऋण पुस्तिका प्र०डी० 2, न्यायालय प्रथम व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-2 गोहद के प्रकरण क्रमांक 27/16 ए इ०दी० में पारित निर्णय दिनांक 09.05.17, आज्ञाप्ति प्र०डी० 3 व 4 के रूप में प्रस्तुत किए हैं।

### // वाद प्रश्न क्र० 1 व 3 का निष्कर्ष //

8. तथ्यों एवं साक्ष्य में उत्पन्न परिस्थितियों में पुनरावृत्ति के निवारण हेतु उक्त वादप्रश्नों का एक साथ निराकरण किया जा रहा है। वादीगण की ओर से अभिवचनों की पुनरावृत्ति शपथपत्रीय साक्ष्य में की गयी है। वादप्रश्नों को प्रमाणित करने का दायित्व वादीगण पर था। उनकी ओर से यह साक्ष्य प्रस्तुत की है कि विवादित भूमि के भूमिस्वामी मनीराम पुत्र खोजे थे, जिन्होंने सर्वे क्र० 294 रकबा 0.54 हे० में अपना 1/3 हिस्सा जर्ज रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 29.01.2013 को वादीगण को बतौर प्रतिफल 1,45,800/-रुपये प्राप्त कर निष्पादित किया था। उक्त तथ्य को प्रमाणित किए जाने के संबंध में विक्रय पत्र प्र०पी० 12 अभिलेख पर प्रस्तुत किया है। प्रतिवादी क्रमांक 4 लगायत 6 ने विवादित भूमि के स्वामी स्व० खोजे के होने, तत्पश्चात विवादित भूमि के स्वामी मनीराम पुत्र खोजे होने के आधार पर संयुक्त रूप से अपने भाईयो के साथ स्वत्व व आधिपत्यधारी होने का अभिवचन किया है तथा पैत्रिक संपत्ति होने के कारण सहदायिकी के आधार पर विवादित भूमि में प्रति०क्र० 1 के साथ साथ अपना भी अंश होने का अभिवचन किया है। उक्त अभिवचन को प्रमाणित किए जाने के



संबंध में प्रति०गण की ओर से ऐसा कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया गया जो विवादित भूमि स्व० खोजे के स्वामित्व की होने के संबंध में न्यायालय के समक्ष तथ्य प्रकट करता हो। वादी की ओर से अवश्य नामांतरण पंजी क्रमांक 4 प्र०पी० 5 प्रस्तुत की है जिसके माध्यम से प्रति०क्र० 1 के पक्ष में नामांतरण दिनांक 23.12.13 को होने का उल्लेख है। इस प्रकार से दस्तावेजों के आधार पर विवादित भूमि के पूर्व स्वामी मनीराम के होने का तथ्य स्पष्ट हो रहा है। शीलादेवी प्रति०सा० 1 प्रतिपरीक्षण में कण्डिका 6 में स्वीकार करती है कि उनके पिता जब जीवित थे तो उन्होंने वादीगण के पक्ष में विक्रय पत्र किया था।

9. प्रकरण में प्र०पी० 12 के विक्रय पत्र के अस्तित्व को स्व० मनीराम के उत्तराधिकारी के रूप में प्रति०क्र० 4, 5 व 6 ने स्वीकार किया है। जहां तक प्रति०क्र० 2 का प्रश्न है तो उसने वादीगण के पक्ष में किए गए विक्रय पत्र प्र०पी० 12 की जानकारी उन्हें न होने का अभिवचन किया है। इस प्रकार से प्र०पी० 12 के विक्रय पत्र को असत्य प्रमाणित किए जाने के संबंध में कोई भी चुनौती प्रतिवादीगण की ओर से प्रस्तुत नहीं की गयी है। प्रतिवादीगण में से किसी ने यह भी आपत्ति नहीं की है कि प्र०पी० 12 का विक्रय पत्र कथित स्व० मनीराम के द्वारा निष्पादित नहीं किया गया है और न ही स्व० मनीराम के निष्पादन चिन्ह को कोई चुनौती दी गयी है। सर्वोत्तम साक्षी प्रति०क्र० 4 लगायत 6 हो सकते थे, वे भी शीला प्रति०सा० 1 के रूप में उनके पिता स्व० मनीराम द्वारा किए गए विक्रय पत्र के तथ्य को भलीभांति स्वीकार करती हैं। ऐसे में उक्त स्वीकृति स्व० मनीराम एवं उनके हित प्रतिनिधियों के प्रति बाध्यकर है। जानकारी का अभाव खण्डन की श्रेणी में नहीं आता है। इस प्रकार से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि विवादित भूमि के स्वामी मनीराम द्वारा अपने जीवनकाल में वादीगण को प्र०पी० 12 के विक्रय पत्र के माध्यम से विवादित भूमि में अपने अंश का विक्रय किया था।

10. प्रति०क्र० 2 ने विवादित भूमि का  $1/3$  अंश प्रति०क्र० 1 द्वारा उसके पक्ष में अंतरित किए जाने का अभिवचन एवं साक्ष्य प्रस्तुत की है। प्रति०क्र० 2 के पक्ष में निष्पादित विक्रयपत्र दि० 24.06.14 प्र०पी० 3 एवं प्र०डी० 1 के रूप में अभिलेख पर है। उक्त विक्रय पत्र के माध्यम से प्रति०क्र० 1 महावीर द्वारा प्रति०क्र० 2 के पक्ष में विक्रय किए जाने का उल्लेख किया गया है। चूंकि अभिलेख पर यह तथ्य प्रमाणित है कि विवादित भूमि के पूर्व स्वामी स्व० मनीराम द्वारा अपने जीवनकाल में ही प्र०पी० 12 के विक्रय पत्र से वादीगण को विवादित भूमि सर्वे क्र० 294 का एक तिहाई रकबा 0.18 हे० विक्रय कर दिया गया तो ऐसी दशा में उसकी मृत्यु हो जाने के बाद प्रति०क्र० 1 द्वारा प्रति०क्र० 2 के पक्ष में किया गया विक्रय पत्र अधिकारिता विहीन एवं प्रति०क्र० 2 के पक्ष में कोई अधिकार उत्पन्न नहीं करता है। इस प्रकार से प्रति०क्र० 2 के पक्ष में निष्पादित विक्रयपत्र विवादित भूमि सर्वे क्र० 294 रकबा 0.54 के  $1/3$  भाग अर्थात् 0.18 हे० के संबंध में वादीगण के हितों के प्रतिकूल होने से शून्य व निष्प्रभावी होना प्रमाणित पाया जाता है। तदनुसार वादप्रश्न क्रमांक 1 व 3 का निष्कर्ष साबित के रूप में दिया जाता है।

// वाद प्रश्न क्र० 2 व 4 का निष्कर्ष //

11. प्रकरण में वादीगण ने विवादित भूमि विक्रय पत्र प्र०पी० 12 के द्वारा क्रय किए जाने के संबंध में अभिवचन व साक्ष्य प्रस्तुत की। तत्पश्चात् स्व० मनीराम की मृत्यु हो जाने के उपरांत प्रति०क्र० 1 द्वारा उसके पक्ष में कराए गए नामांतरण आदेश प्र०पी० 5, तत्पश्चात् प्रति०क्र० 2 द्वारा कराए गए नामांतरण आदेश प्र०पी० 4 की जानकारी मिलने के आधार पर उनके विरुद्ध अपील प्रस्तुत किए जाने का तथ्य प्रकट किया है। प्र०पी० 6 लगायत 11 की कार्यवाही अनुविभागीय अधिकारी गोहद के समक्ष प्रस्तुत किए जाने का तथ्य अभिलेख पर है। वादीगण ने विवादित भूमि पर उनका शांतिपूर्ण आधिपत्य होना बताया है जिसकी पुष्टि स्वयं प्रतिवादी शीला प्रति०सा० 1 द्वारा अपने अभिसाक्ष्य की कण्डिका 6 में किया है और स्वीकार किया कि "यह बात सही है कि कमलकिशोर और विजयकुमार को मेरे पिता मनीराम ने 18 विस्वा जगह का वयनामा किया था। यह सही है कि उक्त 18 विस्वा जगह पर कमल किशोर और विजय कुमार की खेती हो रही है और शेष जमीन पर महावीर, लाली, राजाबेटी और मेरी खेती हो रही है।" इस प्रकार से वादीगण का विवादित भूमि पर शांतिपूर्ण आधिपत्य होने का तथ्य स्वयं प्रतिवादी की साक्ष्य से पुष्ट हो रहा है।

12. प्रति०क्र० 2 ने तर्क प्रस्तुत किया है कि उसके पक्ष में नामांतरण आदेश प्र०पी० 4 हुआ था जिसमें वादीगण द्वारा कोई आपत्ति नहीं की गयी थी इस कारण से विवादित भूमि पर उसका आधिपत्य है। जहां तक प्र०पी० 4 के नामांतरण आदेश का प्रश्न है तो वह राजस्व न्यायालय में चुनौती के अधीन है। साथ ही प्रकरण में जब विवादित भूमि का विक्रय पूर्व स्वामी द्वारा वादीगण के पक्ष में कर दिया गया था तो प्रति०क्र० 2 द्वारा विवादित भूमि को अन्य भूमि के साथ क्रय किए जाने का तथ्य स्वयं वादीगण के शांतिपूर्ण स्वत्व व आधिपत्य में हस्तक्षेप किए जाने की श्रेणी में आता है। प्रति०क्र० 1, प्रति०क्र० 2 के यहां मजदूरी का कार्य करता है, जैसा कि सुनील प्रति०सा० 2 ने कण्डिका 8 में स्वीकार किया है। ऐसी दशा में प्रति०क्र० 1 से मिलकर वादीगण के शांतिपूर्ण आधिपत्य में हस्तक्षेप का तथ्य साक्ष्य से स्पष्ट हो रहा है। अतः वादप्रश्न क्र० 2 का निष्कर्ष "साबित" तथा वादप्रश्न क्र० 4 का निष्कर्ष "प्रतिवादी क्रमांक 2 हस्तक्षेप हेतु प्रयासरत है," के रूप में दिया जाता है।

// वाद प्रश्न क्र० 5 का निष्कर्ष //

13. प्रतिवादी क्रमांक 2 की ओर से वादीगण के वाद के मूल्यांकन तथा न्यायशुल्क की अपर्याप्तता के संबंध में अभिवचन किए हैं। स्वीकृत रूप से यह अभिलेख पर है कि विवादित भूमि कृषि भूमि है जिसका भू राजस्व 4.50 रुपये नियत है जिसके एक तिहाई भाग का भू राजस्व 1.50 रुपये होते हैं। वादीगण ने 2 रुपये भूराजस्व के बीस गुना 40/-रुपये स्वत्व घोषणा हेतु मूल्यांकन कर 500/-रुपये न्यायशुल्क तथा स्थाई निषेधाज्ञा हेतु 40/-रुपये कुल 540/-रुपये न्याय शुल्क प्रस्तुत की है। प्रति०क्र० 2 का अभिवचन है कि वादीगण ने विक्रय पत्र प्र०पी० 3/प्र०डी० 1 को उनके हितों के प्रतिकूल शून्य व निष्प्रभावी घोषित कराने की सहायता चाही है जिसका प्रतिफल

Filing no 2303009772015 7

RCS-A/006/00089/2015

मूल्य 4,50,000/-रुपये है जिसके अनुसार वादीगण को मूल्यांकन कर न्यायशुल्क प्रस्तुत करनी चाहिए थी। प्र०पी०-3/प्र०डी० 1 के विक्रय पत्र में वादीगण न तो स्वयं पक्षकार हैं और न ही वे पक्षकार के हित प्रतिनिधि के माध्यम से दावा कर रहे हैं। ऐसी दशा में उन्हें उक्त विक्रय पत्र के प्रतिफल मूल्य के आधार पर वाद मूल्यांकन करने तथा मूल्यानुसार न्यायशुल्क प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। यदि वे विक्रय पत्र में पक्षकार या उनके हित प्रतिनिधि होते तो इस प्रकार से उन्हें मूल्यांकन एवं न्यायशुल्क प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती। अतः वाद प्रश्न क्रमांक 5 का निष्कर्ष "हाँ" के रूप में दिया जाता है।

#### सहायता एवं व्यय

14. उपरोक्त विवेचन के आधार एवं तथ्यों व साक्ष्य की अधिप्रबलता के आधार पर वादीगण विवादित भूमि सर्वे क्र० 294 रकबा 0.540 हे० के एक तिहाई भाग अर्थात् 0.18 हे० स्थित मौजा सिनोर तहसील गोहद जिला भिण्ड के संबंध में वाद सारतः प्रमाणित करने में सफल रहे हैं। अतः निम्नानुसार आज्ञा दी जाती है-

अ-वादीगण सर्वे क्र० 294 रकबा 0.540 हे० के 1/3 भाग के संयुक्तः स्वामित्व व आधिपत्यधारी हैं।

ब-प्रतिवादी क्रमांक 2 के पक्ष में हुआ विक्रय पत्र दिनांक 24.06.2014 विवादित भूमि पर वादीगण के स्वत्व के मुकाबले शून्य व निष्प्रभावी है।

स-वादीगण के पक्ष में एवं प्रतिवादी क्र० 2 के विरुद्ध इस आशय की स्थाई निषेधाज्ञा प्रदान की जाती है कि प्रति०क्र० 2 न तो स्वयं और न ही अपने हित प्रतिनिधि के माध्यम से विवादित भूमि पर वादीगण के आधिपत्य में हस्तक्षेप करेगा और न ही करावेगा।

द-उभय पक्षों का वाद व्यय प्रतिवादी क्र० 1 व 2 वहन करेंगे। अधिवक्ता शुल्क प्रमाणित होने पर अथवा सूची अनुसार, जो भी कम हो, आज्ञा में जोड़ी जाये।

तदनुसार आज्ञा तैयार की जाये।

निर्णय खुले न्यायालय में टंकित,  
हस्ताक्षरित, मुद्रांकित व दिनांकित  
कर उद्घोषित किया गया।

मेरे निर्देशन पर टंकित  
किया गया।

(Amit kumar Gupta)  
Civil judge Class-1  
Gohad distt.Bhind (M.P.)

(Amit kumar Gupta)  
Civil judge Class-1  
Gohad distt.Bhind (M.P.)